आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received: 11/06/2022; Accepted: 14/06/2022; Published: 24/06/2022

हिंदी भाषा और संचार माध्यम

- डॉ. रंजना पाटिल
हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री चन्नबसवेश्वर महाविद्यालय,
भालकी जि बीदर (५८५३२८)

डॉ. रंजना पाटिल, हिंदी भाषा और संचार माध्यम ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 2/जून 2022, (108-114)

प्रस्तावना : आज के युग को जनसंचार का युग कहा जाता है | कुछ वर्ष पहले हमें हजारों किलोमीटर लम्बी टेलीफोन केबले डालनी पड़ती थी | ये केबल जमीन के निछे होती थी या समुद्रतल से होकर जाती थी इनको बिछाना बड़ा ही टेडा काम था | पर आज हमारे पास ऐसी टेलीफोन प्रणालियाँ है जिनके द्वारा संपर्क करने के लिए हमें किसी केबल की आवश्यकता नहीं होती | आज मानव ने विडियो टेलीफोन विकसित कर लिए हैं | जिनसे हम बात तो कर ही सकते है साथ ही साथ दोनों ओरसे बात करने वाले लोग एक दूसरे का फोटो भी देख सकते है | इन्हें हम मोबाइल या सेलफोन कहते है |

शब्द संकेत : हिंदी भाषा, संचार माध्यम, संचार के प्राचीन साधन, समाचार पत्र, आकाशवाणी की भाषा, दूरदर्शन, विज्ञापन |

हिंदी भाषा :- हिंदी भारत के एक विशाल भूखंड में और जनसंख्या के एक बड़े हिस्से में बोली जाती है | प्रशासन, वाणिज्य, जन-संपर्क, जनसंचार माध्यम, कला, संगीत, साहित्य, पत्रकारिता, मनोरंजन, खेलकूद इत्यादी के क्षेत्र में हिंदी का एक अखिल भारतीय रूप बन गया है | समय के साथ शब्द भंडार व्याकरण, पद विन्यास और उच्चारण के लिए मानकीकरण की ओर हिंदी बढी | सामाजिक व्यवहार की औपचारिक भाषा के रूप में भी राष्ट्र ही नहीं अपितु अंतराष्ट्रीय जन-जीवन में हिंदी को सार्वजनिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो चुकी है | हिंदी

के प्रख्यात विद्वान डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'भाषा और समाज' में लिखा है - बोलियां लहरों की तरह है | प्रत्येक लहर का दायरा दस-बारह कोस का होता है | इनमें से जब कोई एक बोली भाषा बनकर बारह कोस की जगह बारह सौ कोस दायरा घेर लेती है, तब भी वे बोलियाँ समाप्त नहीं हो जाती | भाषा के साथ उनका शांतिपूर्ण या अशान्तिपूर्ण सह अस्तित्व बना रहता है |

संचार माध्यम :- आज के युग को जनसंचार का युग कहा जाता है | आकाशवाणी, दूरदर्शन, फिल्म, समाचार पत्र, वीडियो, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि ने विश्व भर की मानव जाति को प्रभावित किया है | शिक्षा ने विज्ञान को जन्म दिया और विज्ञान से संचार के आधुनिक साधनों को संचार शब्द अंग्रेजी के कम्युनिकेशन शब्द का पर्यायवाची है | संचार के माध्यमों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है |

1 शब्द संचार माध्यम : इसके अंतर्गत समाचार पत्र पत्रिकाएं तथा अन्यत्र मुद्रण सामग्री आती है।

2 श्रव्य संचार माध्यम: रेडियो, कैसेट, तथा टेप रिकॉर्डर आदि।

3 दृश्य संचार माध्यम: दूरदर्शन, विडियो,कंप्यूटर तथा फिल्म आदि इसके अंतर्गत आते हैं।

जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्र, रेडियो तथा दूरदर्शन का विशेष महत्व है | वर्तमान समय में विभिन्न समाचारों को जन सामान्य तक पहुंचाने में इनकी भूमिका रही है | इसलिए समाचार की भाषा पर ही इनकी संप्रेषण शक्ति आधारित है | भाव अभिव्यक्ति के साधन को भाषा की संज्ञा दी जा सकती है | समाचार संप्रेषण को पत्रकारिता भी कहते हैं पहले पत्रकारिता की भाषा के विषय में मान्यता रही कि इसका सरल सहज सुगम होना अनिवार्य है | आज पत्रकारिता बहु आयामी होकर जीवन के विविध क्षेत्रों तक विस्तार कर चुकी है | पत्रकार सर्वप्रथम विषय की गहन और अनुकूल जानकारी प्राप्त करता है| उसके उपरांत पाठक या दर्शक की मानसिकता पर चिंता करता है | पत्रकार अभिव्यक्ति देने के लिए भाषा के स्वरूप को अपनाता है | यह समाचार पत्रों रेडियो तथा दूरदर्शन के परिप्रेक्ष में समान रूप से संभव नहीं हो पाता |

संचार के प्राचीन साधन :- एक समय था जब एक स्थान से दूसरे स्थान तक सूचनाएं भेजने के लिए प्राचीन मानव चिल्लाकर बिगुल बजाकर आग जलाकर या किसी मीनार से प्रकाश दिखाकर या ढोल बजाकर और लकड़ी के लट्ठो को बजाकर सूचनाएं दिया करता था | धीरे धीरे सभ्यता का विकास हुआ | रोम के सिपाहियों ने विशाल मीनारों से टॉर्च की रोशनी दिखाकर संकेत देने आरंभ किए | मनुष्य ने मनुष्य

के द्वारा लंबी दूरियां तय करके घोड़ों पर सवारी करके संदेश देने आरंभ किए | मुगल साम्राज्य में कबूतरों के गले में धागे से चिट्ठी बांधकर संदेशवाहक के रूप में उनका प्रयोग किया गया |

बारहवी शताब्दी के रूप में बगदाद के सुल्तान ने डाक सेवा के लिए कबूतरों का प्रयोग करना आरंभ किया | कवियों की कल्पना में चंद्रमा और बादल संदेशवाहक के रूप में कार्य करते थे | उदाहरण कालिदास के मेघदूत नामक पुस्तक में बादलों के संदेशवाहक के रूप में प्रयोग किया गया है | सोलहवीं शताब्दी के अंत में संदेश भेजने के लिए डाक प्रणाली का आरंभ हुआ | सोलहवीं शताब्दी में बहुत से देशों में डाक व्यवस्था को सरकार ने अपने हाथों में ले लिया सन १६४० में इंग्लैंड में डाक टिकट जारी किए गए |

सं. १८५४ में भारत में डाक प्रणाली आरंभ हुई | शुरू में डाक प्रणाली बहुत धीमी थी महीने का समय लग जाता था | २५० वर्ष पहले कई देशों में ओउद्योगिक क्रांति जन्म ले चुकी थी जिसमें मानव ने रेल और मोटर गाड़ी का विकास कर लिया था | संदेश के आदान प्रदान में तेजी आ गई | ओद्योगिक क्रांति के साथ साथ वैज्ञानिकों ने नए नए अविष्कारों को जन्म दिया | देखते ही देखते टेलीग्राफ, टेलेक्स, टेलीप्रिंटर, टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन, संचार उपग्रह, दूरसंचार साधनों के रूप में मानव को उपलब्ध हुए ।

अधिक दूरियों के लिए मानव ने भूमंडल संचार के लिए बहुत से साधन विकसित कर लिए सन १९५७ में अंतरिक्ष युग की शुरुआत हुई आज इन दूर संचार साधनों के आधार पर दुनिया बहुत छोटी हो गई है जिसके आधार पर हम पलक झपकते ही किसी भी देश से संपर्क स्थापित कर सकते हैं | फैक्स मशीने आज दूरसंचार का जाना माना साधन बन गयी है | इनकी सहायता से दस्तावेज तथा चित्रों को भेजा जा सकता है | इस प्रक्रम द्वारा दूर स्थानों तक किसी मरीज का एक्सरे केंट स्कैन आदि को भेजा जा सकता है |

इंटरनेट एक ऐसी सुविधा है जो डाकिया का काम करती है | इंटरनेट आज जीवन के सभी क्षेत्रों में छा गया है | इसका प्रयोग विश्वविद्यालयों, अनुसंधान केंद्रों, सरकारी कार्यालयों, व्यापारिक संस्थानों और घरों में हो रहा है यह प्रक्रम हजारों कंप्यूटरों को एक दूसरे से जोड़ते हैं |

"रोज सवेरे घर में आऊँ
देश विदेश की खबर सुनाऊँ
जमीन आसमान की बातें बताऊँ
जानते हो मैं कौन हूं ?"

समाचार पत्र :- समाचार पत्रों में समाचार होते हैं, साथ ही संपादकीय, लघु लेख तथा फीचर भी होते हैं | समाचार पत्र जीवन्त भाषा के स्त्रोत होते हैं | समाज की जैसी परिस्थिति हुई जैसे घटना घटी हो कोई राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक उथल-पुथल हुई | सूखा पड़ा हो, चुनाव हुए हो या कोई हादसा हुआ हो, कोई बड़ा मेल हुआ हो, तो उसी से संबंधित सूचनाएं प्रकाशित होती है | हत्या, आगजनी, लूटमार, डकैती, दुर्घटना आदि के समाचारों को भी स्थान मिलता है | हिंदी के प्रायः सभी समाचार पत्र व्यवहारिक और जीवंत भाषा का प्रयोग करते हैं | देश के किसान मजदूरों के बारे में इनके विचारों का एक अंश इस प्रकार है |

हम लोगों को स्वराज्य का मसविदा बनाने के झंझट में न पढ़कर सीधे गांवो की ओर मुढ़ना चाहिए | हिंदू मुस्लिम वैमनस्य दूर करने का तरीका है कि ग्राम संगठन के काम को हाथ में लेकर बिना भेदभाव के भारत किसानों की सेवा की जाए | किसान और मजदूरों का युग आ गया है | धोती राजनीति से अब काम न चलेगा | भविष्य किसानों और मजदूरों के हाथ में है |

आज के भाग दौर में मानव मात्र ही यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह कम से कम समय में और कम से कम शब्दों में अपने अधिकतम भावों और विचारों की अभिव्यक्ति करें | यूनेस्को, नाटो नाबार्ड जैसे संस्थागत , शब्द, वामो, द्रमुक, कपा, भाजपा आदि राजनीतिक दलों के नाम प्रचलन में आए हैं |

आकाशवाणी की भाषा :- समाचार पत्रों के बाद आकाशवाणी का महत्वपूर्ण स्थान है | आकाशवाणी के महत्व के संबंध में कैलाश चंद्र भाटिया का कहना है - "आज भी दूरदर्शन की चकाचौंध में बावजूद समाचारों की दृष्टि से आकाशवाणी का महत्व है | क्षेत्रीय स्टेशनों से वहां की लोक भाषा को जोड़ गया है | समाचारों की दृष्टि से आकाशवाणी अग्रणी है | समाचारों में ध्यान रखा जाता है कि एक वाक्य में एक ही सूचना समाहित हो | वाक्य छोटे, सरल व स्पष्ट हो वाणी प्रभावी हो | उच्चारण में कष्ट साध्य अप्रचलित शब्दों से बचा जाए |"

आकाशवाणी में दो प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं | पहला उच्चरित दूसरा संगीत परक है | पहले कार्यक्रम के अंतर्गत वार्ता, साक्षात्कार, समाचार, परिचर्चा, रूपक, नाटक, रिपोर्ट कवि सम्मेलन एवं मुशायरा आदि है | तो संगीतपरक कार्यक्रम में वाद्य संगीत, गायन, फिल्म संगीत, शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, पारस्परिक संगीत और लोक संगीत आता है | संगीत को छोड़कर सभी कार्यक्रम भाषा संबंधी है, इन कार्यक्रमों से हिंदी भाषा का बहुत बड़ा विकास हो रहा है |

रेडियो की भाषा बोलचाल की भाषा पर आधारित होती है और आवश्यकतानुसार लोक प्रचलित मुहावरों का प्रयोग किया जाता है| जैसे भारतीय टीम ने श्रीलंका के विरुद्ध क्रिकेट का फाइनल मैच जीतकर देश की कीर्ति में चार चांद जड़ दिए| उदाहरण : आज रात मुसल धार वर्षा होने की संभावना है, कल की विमान दुर्घटना में पच्चीस लोगो के मरने की आशंका है| इन दोनों वाक्यों में संभावना आशंका शब्दों का प्रयोग ठिक है।

आकाशवाणी की भाषा में भद्रता का ध्यान बहुत रखा जाता है | संभोग के स्थान पर योन- संबंध अँधा न कहकर दृष्टिविहीन कहने में भद्रता है | स्त्री के लिए 'महिला' शब्द का प्रयोग उपयुक्त होता है | आकाशवाणी की भाषा में सरलता के साथ वर्तनी शुद्धता पर भी ध्यान दिया जाता है| क्योंकि दोषपूर्ण वर्तनी से शब्दों के गलत उच्चारण का डर रहता है |

सारांशतः कहा जा सकता है कि आकाशवाणी में प्रयुक्त हिंदी जन सामान्य की भाषा है| भाषागत शुध्दता के साथ साथ शुध्द उच्चारण पर भी बल दिया जाता है| आकाशवाणी में प्रयुक्त हिंदी जन सामान्य की भाषा होती है| पंख प्रशासन, विधि, बैंक, शिक्षा, खेलकूद, स्वास्थ्य विज्ञान टेक्नोलॉजी, कृषि आदि से संबंधित शब्द जो भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित है यथावत प्रयुक्त होते हैं|

दूरदर्शन :- आधुनिक युग में दूरदर्शन सर्वाधिक प्रभावशाली दृश्य श्रव्य संचार माध्यम है, जिसमें हिंदी भाषा समन्वित रूप में मिलती है| दूरदर्शन से प्रसारित हर कार्यक्रम को अधिक से अधिक जनता तक पहुंचाना और उन्हें अधिक से अधिक लाभान्वित कराना दूरदर्शन का लक्ष्य रहता है| दूरदर्शन में समाचार लेखक चित्रों के माध्यम से घटनाओं का यथार्थ वर्णन करता है| दूरदर्शन दर्शक को स्वयं उस स्थान पर ले जाता है, जहा घटनाएँ हुई जहासे समाचार विकसित हुआ | दूरदर्शन का एक चित्र हजार शब्दों के बराबर होता है | तात्पर्य यह है की हजारो शब्दों में जिस स्थिति भाव या घटना की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती उसे हम एक चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं| चित्र तो शब्द रहित काव्य है| चित्र समाचार के आभूषण तो होते ही है साथ ही साथ दर्शकों के मन मस्तिष्क को मत कर स्वयं उसी के दिमाग में विचारों के शब्द निर्मित करने में प्रधान भूमिका निभाते हैं| यह वाक्य स्पष्ट, सरल एवं प्रभाव पूर्ण होना चाहिए | आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग करना उचित है| वैसे तो

आज की स्थिति में दूरदर्शन हिंदी के विकास का कार्य बहुत जोर से हो कर रहा है| दूरदर्शन में हिंदी प्रयोजनमूलक भाषा बनती जा रही है|

बिजनेस, विज्ञापन, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय क्रीडा क्षेत्र के साथ-साथ साहित्य और कला संबंधी विषयों पर नए नए शब्द प्रयुक्त हो रहे हैं | हिंदी भाषा के इन शब्दों को हिंदेतर भाषीदर्शक भी समझने लगे हैं | इस तरह दूरदर्शन में प्रयुक्त हिंदी भाषा का जहां वर्चस्व बड़ा है और बढ़ रहा है, दूसरी और अंग्रेजी का भी प्रचार बढ़ रहा है अधिकतर विज्ञापन के माध्यम से दूरदर्शन में हिंदी और अंग्रेजी 50-50 बनती जा रही है इस पर सावधानी बरतना जरूरी है|

विज्ञापन :- साधारणत: विज्ञापन हमें जनसंचार के माध्यम से मिलते हैं | फिर भी विज्ञापनों की हिंदी समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन आदि में प्रयुक्त हिंदी से भिन्न होती है | इसका वास्तविक उद्देश्य वस्तु को उपभोक्त तक पहुंचाना या वस्तु एक उपभोक्ता को खींच लाना होता है | रेडियो दूरदर्शन पत्र-पत्रिकाओं के बावजूद विज्ञापन के अन्य माध्यम भी है जैसे होर्डिंग पोस्टर सिनेमा आदि।

विज्ञापनों के हिंदी में साधारण शब्दों का प्रयोग होने के बावजूद भी यह बोलचाल की हिंदी से भिन्न होती है विज्ञापन का उद्देश्य उपभोक्ता को आकर्षित करना होता है | इसलिए वाक्य रचना और शब्दों के गठन में नए नए प्रयोगों के प्रयास रहते है । विज्ञापन चाहें वस्तुओं का हो या सेवओं का उसकी भाषा आकर्षक सुसम्प्रेशानिया स्मरणीय एवं प्रभावोत्पादक होती है|

विज्ञापनों भाषा के नमूने निम्न प्रकार है _

१) आयोडेक्स मलिए - काम पर जाइए |

२) जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

३) अब आप ही चुनिए सर्वोत्तम ही खरीदिए एसीसी सीमेंट

रेडियो दूरदर्शन आदि में यह विज्ञापन सुंदर संगीत से जोड़कर गायन के रूप में प्रचारित किए जाते हैं जो मन को भा लेते हैं|

उपसंहार :- उपर्युक्त विवेचन से यह ज्ञात होता है कि पुरातन काल की स्थिति और आज की स्थिति में कितना बदलाव है| आज की स्थिति में संचार माध्यम से एक ही क्षण में हम देश विदेश

की वार्ताएं देख सकते हैं अपनी सूचनाएं इंटरनेट के दौरान पहुंचा सकते हैं | कौनसे किताब की आवश्यकता हो तो हम ढूंढते रहते थे पर आज की पीढ़ी इंटरनेट की सहायता से अपनाती है , तो विद्यमान रूप से और मुद्रण रूप से देख सकते हैं रिलायंस मीडिया का कहना है कि आज की सुविधा के अनुसार ' कर लो दुनिया मुठ्ठी में' यहां हमें जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

१) डॉ मधु धवन - बोलचाल की हिंदी और संचार २००७ परंपरा पब्लिकेशन शाहदरा दिल्ली पृ . क्र .५२

२) वही पृ .क्र .८२

३) डॉ .सी. एल . गर्ग- सूचना एवं दूरसंचार प्रौद्योगिकी २००८ सुरक्षित प्रकाशक पूनम पुस्तक भवन

दिल्ली पृ .क्र .१०

४) श्याम माथुर- सिने पत्रकारिता २००८ प्रकाशक राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी ।

****